विद्या भवन बालिका लिद्यापीठ,लखीसराय

वर्ग नवम विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

पाठ: द्वितीय: पाठनाम स्वर्णकाक:

ता: 18-04-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

- पुरा कश्मिंश्चित् ग्रामे एका निर्धना वृद्धा स्त्री न्यवसत् तस्याश्चैका दुहिता विनम्रा मनोहरा चासीत् ।एकदा माता स्थाल्यां तण्डुलान्निक्षिप्य पुत्रीमादिदेश –सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष ।किञ्चित्कालादनन्तरं एको विचित्र: काक: समुड्डीय तामुपजगाम् ।
- शब्दार्थ:
  पुरा –प्राचीनकाल में ,कश्मिंश्चित् -किसी में ,निर्धना -गरीब न्यवसत् –रहती थी , दुहिता -पुत्री ,विनम्रा -नम्रस्वभाव वाली मनोहरा -सुन्दर , एकदा -एकबार, स्थाल्याम् –थाली में तण्डुलान् -चावलों का ,निक्षिप्य -रखकर ,आदिदेश -आदेश दिया सूर्यातपे -धूप में ,खगेभ्यो- पक्षियों से ,किञ्चिद् –कुछ कालात् -समय से, अनन्तरम् –बाद में ,समुड्डीय -उड़कर , उपजगाम्-समीप पहुँच गया
- **सरलार्थ**

  प्राचीन समय में किसी गांव में एक निर्धन बुढ़िया स्त्री रहती थी। उसकी एक नम्र स्वभाव वाली सुशील और सुंदर बेटी थी ।एक बार मां ने थाली में चावलों को रखकर पुत्री को आज्ञा दी सूरज की गर्मी में

  चावलों की पक्षियों से रक्षा करो । कुछ समय बाद एक विचित्र कौवा

उड़ कर उसके समीप आया ।